बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय पांच

परिस्थिति-संबंधी दृष्टिकोण : प्रकाशन और परिस्थिति

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:27) 4

II. प्रकाशन की विषयवस्तु (5:12) 4

A. वास्तविकताएं (6:56) 5

B. लक्ष्य (10:21) 5

C. माध्यम (15:23) 6

III. प्रकाशन की प्रकृति (21:33) 6

A. प्रेरणा (24:18) 7

B. उदाहरण (30:17) 8

IV. प्रकाशन के प्रति नीतियां (36:20) 10

A. शिथिलता की नीति (37:25) 10

1. वर्णन (39:02) 11
2. परिणाम (41:47) 12
3. सुधार (47:11) 12

B. कड़ाई की नीति (50:52) 13

1. वर्णन (51:07) 13
2. परिणाम (54:48) 14
3. सुधार (59:13) 15

C. मानवीय अधिकार की नीति (1:03:26) 15

1. वर्णन (1:03:42) 15
2. परिणाम (1:06:41) 16
3. सुधार (1:10:11) 16

V. प्रकाशन का प्रयोग (1:13:50) 17

A. वास्तविकताएं (1:16:21) 17

B. लक्ष्य (1:24:08) 19

C. माध्यम (1:30:23) 21

VI. उपसंहार (1:36:43) 22

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 23

उपयोग के प्रश्न 29

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:27)

परिस्थिति की एक सही समझ :

- हमें परमेश्वर के प्रकाशन को समझने में सहायता करती है।
- निर्णय लेने में सहायता करती है।

II. प्रकाशन की विषयवस्तु (5:12)

प्रकाशन के प्रकार :

- विशेष
- सामान्य
- अस्तित्व-संबंधी

प्रकाशन वास्तविकताओं के रूप में बातों को दर्शाते हैं। ये वास्तविकताएं उन सब बातों को सम्मिलित करती हैं जो परमेश्वर हमारी परिस्थिति के बारे में प्रकट करता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. वास्तविकताएं (6:56)

परमेश्वर हमारी परम वास्तविकता है, हमारा परम नैतिक परिपेक्ष्य।

परमेश्वर के समक्ष हमारी जिम्मेदारियों को हमें बताने के लिए उसे पहले स्वयं को हमारे समक्ष प्रकट करना जरूरी है।

B. लक्ष्य (10:21)

लक्ष्य — हमारे प्रयासों के अपेक्षित परिणाम।

प्रत्येक प्रकार का प्रकाशन हमें वह लक्ष्य प्रदान करता है जिन्हें हमें प्राप्त करना जरूरी है।

पवित्र आत्मा हमारे भीतर कार्य करता है ताकि हम अच्छे लक्ष्यों का अनुसरण करें और बुरे लक्ष्यों को त्याग दें।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. माध्यम (15:23)

हमें :

- परमेश्वर द्वारा प्रकट वास्तविकताओं और लक्ष्यों को जानना है।
- उन उचित माध्यमों को ढूंढना भी जरूरी है जो परमेश्वर ने प्रकट किए हैं।

पवित्रशास्त्र हमें उदाहरणों के द्वारा नैतिक माध्यमों के बारे में सिखाता है :

- नकारात्मक — न मानने वाले उदाहरण
- सकारात्मक — मानने वाले उदाहरण

III. प्रकाशन की प्रकृति (21:33)

हमें परमेश्वर के प्रकाशन की प्रकृति को समझना आवश्यक है।

- ऐसी कौनसी परिस्थितियां हैं जिनके लिए या जिनमें परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट किया है?
- किस प्रकार इन परिस्थितियों को समझना नैतिक निर्णयों में हमारी सहायता करता है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्रशास्त्र में उन सब बातों पर एक व्यावहारिक प्रमुखता पाई जाती है जिनके बारे में हम सोचते हैं कि हम सामान्य और अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन में पा चुके हैं।

A. प्रेरणा (24:18)

प्रेरणा :

- सामूहिक प्रक्रिया

- अभिप्रायों और व्यक्तित्वों की अभिव्यक्ति को सुरक्षित रखता है :

    - पवित्रशास्त्र के दैवीय लेखक की

    - पवित्रशास्त्र के मानवीय लेखकों की

पवित्रशास्त्र के दैवीय लेखक :

- पवित्र आत्मा

- मानवीय लेखक

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्रशास्त्र को समझने के लिए हमें इन बातों को समझना जरूरी है :

- इसके लेखकों की *वास्तविकताओं*

- इसके लेखकों के *लक्ष्यों*

- इसके लेखकों द्वारा प्रयोग किए *माध्यमों*

B. उदाहरण (30:17)

पवित्रशास्त्र के किसी विशेष लेख की सब वास्तविकताओं को पहचानना असंभव है, परन्तु फिर भी विश्वासयोग्यता के साथ पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने करने के लिए हम इसे पर्याप्त रूप से समझ सकते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1 कुरिन्थियों 10:5-11 दर्शाता है :

- निर्गमन 32
- गिनती 25
- गिनती 21
- गिनती 16

मूसा ने इस्राएलियों की असफलताओं को दोहराने के विरूद्ध भविष्य की पीढ़ियों को चेतावनी देने के उद्देश्य से पंचग्रंथ को लिखा।

पौलुस ने इन वास्तविकताओं पर ध्यान दिया :

- परमेश्वर प्रसन्न नहीं था
- वे जंगल में ढेर हो गए
- कुछ विशेष कार्यों ने परमेश्वर को अप्रसन्न कर दिया :
    - अन्यजातियों के समान कार्य करना
    - मूर्तिपूजा
    - परमेश्वर को परखना
    - कुड़कुड़ाना

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

अन्य वास्तविकताओं पर पौलुस का ध्यान :

- पवित्रशास्त्र में दर्शाए गए विवरण

- लेखक का अभिप्राय

IV. प्रकाशन के प्रति नीतियां (36:20)

हम दो परिस्थितियों से व्यवहार कर रहे हैं :

- पवित्रशास्त्र की परिस्थिति
- वर्तमान परिस्थिति

हमें पवित्रशास्त्र की परिस्थिति को हमारी वर्तमान परिस्थिति के साथ जोड़ने के तरीकों को ढूंढना होगा।

A. शिथिलता की नीति (37:25)

स्पष्टता की इस कमी ने प्रायः मसीहियों को मसीही नैतिकता की सीमाओं को परिभाषित करने के लिए सरल नीतियों को स्वीकार करने की ओर अगुवाई की है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. वर्णन (39:02)

शिथिलता एक ऐसी नीति है जिसकी प्रवृति ढ़ीलेपन की ओर होती है :

- आज के संसार में पापों को पहचानने और उसकी निंदा करने में ढ़ीले
- ऐसी बातों की अनुमति दे देते हैं जिसे बाइबल प्रतिबंधित करती है
- उसे नजरअंदाज कर देते हैं जिसकी बाइबल आज्ञा देती है

मसीही कम से कम दो कारणों से पवित्रशास्त्र के पाठन को शिथिल बना देते हैं :

- भिन्नता — वे मानते हैं कि बाइबल की परिस्थितियां वर्तमान जीवन इतनी अलग हैं कि बाइबल को हमारे समय में लागू नहीं किया जा सकता।
- अस्पष्ट —वे मानते हैं कि बाइबल की परिस्थितियां वर्तमान जीवन में लागू नहीं की जा सकतीं क्योंकि वे बहुत अधिक अस्पष्ट हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. परिणाम (41:47)

शिथिलता मसीहियों को अनेक पापों को न्यायसंगत ठहराने के लिए उत्साहित करती है :

- गलत बातों में से कम गलत बात को चुनना

- अनुचित अपवाद

- झूठी बातें

- अच्छे उद्देश्य बुरे कार्यों को नजरअंदाज कर देते हैं

3. सुधार (47:11)

भिन्नता के जवाब में — वास्तविकताओं, लक्ष्यों और माध्यमों के क्षेत्रों में वर्तमान संसार के साथ बाइबल की समानता पर बल दें।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्रशास्त्र की परिस्थितियां हमारी अपनी परिस्थितियों से पर्याप्त रूप में समान हैं जिससे कि हम वर्तमान परिस्थितियों पर इसे लागू कर सकें।

अस्पष्टता के जवाब में — बाइबल की स्पष्टता पर बल दें।

बाइबल का हर अनुच्छेद आधुनिक संसार में हमें नैतिक शिक्षा के बारे में बताने में पर्याप्त रूप से स्पष्ट है।

B. कड़ाई की नीति (50:52)

1. वर्णन (51:07)

पाप से बचने पर बहुत अधिक महत्व, विशेषकर पवित्रशास्त्र में दर्शाए गए प्रतिबंधों को मानने में।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

समानता — बाइबल की परिस्थितियों को हमारी परिस्थितियों के इतना समान मानती है कि बाइबल हमारे जीवनों पर प्रत्यक्ष रूप से लागू होती है।

अस्पष्ट — जब बाइबल अस्पष्ट प्रतीत होती है तो गलत रूप से सोचते हैं कि पवित्रशास्त्र को कड़ाई से लागू करना एक उचित प्रत्युत्तर है।

2. परिणाम (54:48)

- मसीही स्वतंत्रता को नष्ट करती है

- निराशा भर देती है

- हमारे कर्तव्य को सीखने के प्रयासों में रूकावट बनती है

- हमारे उद्धार के परमेश्वर में आनंद लेने की योग्यता को बाधित करती है

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. सुधार (59:13)

समानता के जवाब में — हमारी वर्तमान परिस्थितियां बाइबल की परिस्थितियों से काफी भिन्न हैं।

अस्पष्टता के जवाब में — पवित्रशास्त्र मसीही नैतिक शिक्षा के विषय में परमेश्वर की इच्छा को दर्शाने के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्ट है।

C. मानवीय अधिकार की नीति (1:03:26)

1. वर्णन (1:03:42)

दूसरे व्यक्तियों से अलग मत रखने की एक मजबूत प्रवृति।

इस मार्ग को चुनने के सम्भावित कारण :

- कलीसिया के अगुवे दावा करते हैं कि केवल उन्हीं के पास पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने का विचार या अधिकार है।
- यह मान लेना कि उनका ज्ञान इतना अपर्याप्त है
- आलसी

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. परिणाम (1:06:41)

- पवित्रशास्त्र के परम अधिकार को ठुकराना

- गलत व्याख्याओं को बढ़ावा देना

3. सुधार (1:10:11)

हमारे परम रूप से प्रकट मानक के रूप में पवित्रशास्त्र की सर्वोच्चता को हमेशा बनाए रखना आवश्यक है।

कलीसिया और इसकी परंपराओं का अधिकार हमारे ऊपर उससे कम है।

हर निर्णय को पवित्रशास्त्र के समक्ष मापना है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

V. प्रकाशन का प्रयोग (1:13:50)

नैतिक निर्णय लेने में एक व्यक्ति परिस्थिति पर परमेश्वर के वचन को लागू करता है।

परमेश्वर का वचन हमारे सारे नैतिक प्रयासों के लिए पर्याप्त है, क्योंकि यह परमेश्वर के चरित्र के बारे में हमें पर्याप्त जानकारी देता है ताकि हम समझ सकें कि क्या करना है।

A. वास्तविकताएं (1:16:21)

वास्तविकताओं में बदलाव परमेश्वर के वचन के प्रयोग में बदलाव की मांग करते हैं।

तीन ऐतिहासिक समय :

- निर्गमन
- वाचा की भूमि
- कलीसिया

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

वास्तविकताएं

- समानताएं

- भिन्नताएं

नैतिक निर्णय :

- समानताएं

- भिन्नताएं

वर्तमान प्रयोग :

- समानताएं

- भिन्नताएं

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्रत्येक नैतिक निर्णय हमसे मांग करता है कि हम वर्तमान वास्तविकताओं और बाइबलीय वास्तविकताओं के बीच समानताओं और भिन्नताओं को पहचान लें।

B. लक्ष्य (1:24:08)

तीन ऐतिहासिक समय :

- निर्गमन
- वाचा की भूमि
- कलीसिया

लक्ष्य :

- समानताएं
- भिन्नताएं

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नैतिक निर्णय :

- समानताएं

- भिन्नताएं

वर्तमान प्रयोग :

- समानताएं

- भिन्नताएं

प्रत्येक नैतिक निर्णय हमसे मांग करता है :

- बाइबलीय लक्ष्यों के प्रकाश में वर्तमान लक्ष्यों पर विचार करने की
- उनके बीच की समानताओं और भिन्नताओं पर ध्यान देने की

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. माध्यम (1:30:23)

तीन ऐतिहासिक समय :

- निर्गमन
- वाचा की भूमि
- कलीसिया

माध्यम :

- समानताएं
- भिन्नताएं

नैतिक निर्णय :

- समानताएं
- भिन्नताएं

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

वर्तमान प्रयोग :

- समानताएं

- भिन्नताएं

हम इनमें सामंजस्य को देखने के द्वारा निश्चय कर सकते हैं कि वर्तमान संसार में प्रयोग करने के लिए कौनसे माध्यम उचित हैं :

- बाइबल में दर्शायी गई परिस्थितियों में

- हमारे अपने जीवन की परिस्थितियों में

VI. उपसंहार (1:36:43)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. परमेश्वर के प्रकाशन की परिस्थिति-संबंधी विषय-वस्तु के उन तीन प्रकारों को पहचानिए और परिभाषित कीजिए जिन्हें जानना नैतिक निर्णय लेने के लिए आवश्यक होता है।

2. वास्तविकताएं क्या हैं? नैतिक निर्णय लेने के लिए वास्तविकताओं को जानना— विशेषकर परमेश्वर के बारे में — क्यों महत्वपूर्ण है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. लक्ष्य क्या हैं? यदि हम नैतिक निर्णय लेना चाहते हैं तो बाइबलीय लक्ष्यों को समझना क्यों महत्वपूर्ण है?

4. माध्यम क्या हैं? हमारे नैतिक निर्णयों में बाइबलीय माध्यमों का प्रयोग क्यों महत्वपूर्ण है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. इस अध्याय में सिखाई गई प्रेरणा की धर्मशिक्षा का वर्णन कीजिए।

6. किस प्रकार के परिस्थिति-संबंधी विचार प्रकाशन पर लागू होते हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. प्रकशन के प्रति अति शिथिल नीति की विशेषताएं क्या हैं? यह नीति कौनसे खतरों को उत्पन्न करती है? हम इस नीति में पड़ने के खतरे से कैसे बच सकते हैं?

8. प्रकशन के प्रति अति कड़ाई की नीति की विशेषताएं क्या हैं? यह नीति कौनसे खतरों को उत्पन्न करती है? हम इस नीति में पड़ने के खतरे से कैसे बच सकते हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. प्रकशन के प्रति मानवीय अधिकार पर अत्यधिक निर्भरता की नीति की विशेषताएं क्या हैं? यह नीति कौनसे खतरों को उत्पन्न करती है? हम इस नीति में पड़ने के खतरे से कैसे बच सकते हैं?

10. जब पवित्रशास्त्र को वर्तमान जीवन पर लागू करने की बात आती है, तो दिए गए बाइबलीय लेख के साथ जुड़ी वास्तविकताओं पर ध्यान देना क्यों महत्वपूर्ण है? वर्तमान परिस्थिति की वास्तविकताओं पर भी ध्यान देना क्यों महत्वपूर्ण है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. जब पवित्रशास्त्र को वर्तमान जीवन पर लागू करने की बात आती है, तो दिए गए बाइबलीय लेख के साथ जुड़े लक्ष्यों पर ध्यान देना क्यों महत्वपूर्ण है? वर्तमान परिस्थिति के लक्ष्यों पर भी ध्यान देना क्यों महत्वपूर्ण है?

12. जब पवित्रशास्त्र को वर्तमान जीवन पर लागू करने की बात आती है, तो दिए गए बाइबलीय लेख के साथ जुड़े माध्यमों पर ध्यान देना क्यों महत्वपूर्ण है? वर्तमान परिस्थिति में उपलब्ध माध्यमों पर भी ध्यान देना क्यों महत्वपूर्ण है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. हमारी परम वास्तविकता, हमारे नैतिक परिपेक्ष्य के रूप में परमेश्वर हमें उसके चरित्र के स्तर के अनुरूप जीवन जीने के लिए क्यों प्रेरित करता है? क्या होगा यदि हम इस वास्तविकता को नजरअंदाज कर देते हैं?

2. 1 कुरिन्थियों 10:31 कहता है, "इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।" हम जीवन के रोजमर्रा के कामों से परमेश्वर को महिमा कैसे दे सकते हैं (जैसे दांत साफ़ करना, बिस्तर सही करना, कार चलाना इत्यादि)?

3. ऐतिहासिक सन्दर्भ के भीतर ही बाइबल की व्याख्या करना क्यों महत्वपूर्ण है? यदि हम बाइबल की सही व्याख्या करने में असफल रहते हैं तो हम कैसी नैतिक गलतियाँ कर सकते हैं?

4. शिथिलता की नीति के तीन वास्तविक या संभावित उदाहरण दीजिए। उस व्यक्ति या समुदाय पर इस नीति का क्या प्रभाव हो सकता है जिसने इसे स्वीकार कर लिया हो?

5. कड़ाई की नीति के तीन वास्तविक या संभावित उदाहरण दीजिए। उस व्यक्ति या समुदाय पर इस नीति का क्या प्रभाव हो सकता है जिसने इसे स्वीकार कर लिया हो?

6. मानवीय अधिकार पर निर्भर रहने की नीति के तीन वास्तविक या संभावित उदाहरण दीजिए। उस व्यक्ति या समुदाय पर इस नीति का क्या प्रभाव हो सकता है जिसने इसे स्वीकार कर लिया हो?

7. प्रकाशन की कौनसी नीति या नीतियां आपके अपने कार्यों को सबसे अधिक प्रदर्शित करती हैं? इन प्रवृतियों में सुधार करने के लिए आप कौनसे व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं?

8. पवित्रशास्त्र को सर्वोच्च प्रकट अधिकार मानने की धारणा किस प्रकार आपको शिथिलता, कड़ाई, या मानवीय अधिकार की नीति में पड़ने से बचा सकती है?

9. हम सब प्रतिदिन कई नैतिक निर्णय लेते हैं। भविष्य में बेहतर निर्णय लेने में सहायता करने के लिए आप इस अध्याय के विचारों को कैसे इस्तेमाल करेंगे?

10. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org